

SHRI THANGA DARLONG

Shri Thanga Darlong is an Indian folk music artist. He is widely recognized for his contribution to the folk music of Tripura and his work in preserving and promoting the traditional Instrument Rosem.

2. Born on July 20, 1920 at Muruai Village, in a poor tribal family, Shri Darlong had no formal school education as there was no school in the hilly Village shifting cultivation was the only means of livelihood. All cultural heritage such as festivals, rituals and ceremonies were associated with the cultivations in all such ceremonies Rosem was the most coveted instrument. Therefore, a keen interest grew in Shri Darlong for the art of making and playing of Rosem ever since his boyhood. His father in law gave him lesson on making and playing of Rosem. He was delighted to have mastered the art within a few months of diligent efforts. He also produced a cassette on the Darlongs of Tripura.

3. In 1950, Shri Darlong embraced the faith of Christianity. Since that time, the use of Rosem came to stop. There was no scope of using of Rosem in the new tread of socio-cultural development. As such on his own interest and enthusiasm, he raised a training programme of making and playing of Rosem with a small number of students at his own residence. But that also came into a halt with no remarkable results.

4. Shri Darlong has received various honours and awards including Sangeet Natak Akademy Awards (2014), Vayoshreshtha Samman Award (2017), Title received –Guru Sishya Parampara Sponsored by E2CC in 2008 etc.

पद्म श्री

श्री थांगा डारलौंग



श्री थांगा डारलौंग एक भारतीय लोक संगीत कलाकार हैं। आपको त्रिपुरा के लोक संगीत में योगदान और पारंपरिक वाद्य रोज़ेम को बनाए रखने तथा उसको बढ़ावा देने में योगदान के लिए जाना जाता है।

2. आपका जन्म 20 जुलाई, 1920 को मुरई गाँव में निर्धन आदिवासी परिवार में हुआ और आपको कोई औपचारिक स्कूली शिक्षा नहीं मिली क्योंकि पहाड़ी गाँव में कोई स्कूल नहीं था और गांव के लोगों के लिए रोजी-रोटी कमाने का एक मात्र साधन झूमिंग कृषि था। त्योहारों, अनुष्ठानों और समारोह जैसी समस्त सांस्कृतिक विरासत खेती से जुड़ी हुई थी और ऐसे सभी समारोहों में रोज़ेम सबसे प्रमुख वाद्य था। इसलिए, रोजेम बनाने और बजाने की कला में आपके अंदर बचपन से ही अत्यधिक रुचि पैदा हो गई। आपके ससुर ने आपको रोजेम बनाने और बजाने की शिक्षा दी। आपने कुछ महीनों के अथक प्रयासों से ही इस कला में महारथ हासिल कर ली थी जिससे उनको बहुत खुशी हुई। आपने त्रिपुरा के डार्लोंग्स पर एक कैसेट का निर्माण भी किया।

3. वर्ष 1950 में, आपने ईसाई धर्म अपना लिया था। तब से रोज़ेम बजाना बंद हो गया। सामाजिक-सांस्कृतिक विकास के नए दौर में रोज़म बजाने की कोई गुंजाइश नहीं थी। अपनी रुचि और उत्साह से आपने अपने आवास पर थोड़े से छात्रों को रोज़म बनाने और बजाने का प्रशिक्षण दिया, लेकिन आपके इस प्रयास का कोई विशेष परिणाम नहीं निकला और इसलिए आपका यह प्रयास भी रुक गया।

4. आपको संगीत नाटक अकादमी अवार्ड (2014), वयोश्रेष्ठ सम्मान अवार्ड (2017) प्राप्त हुए हैं तथा 2008 में E2CC द्वारा प्रायोजित गुरू शिष्य परम्परा उपाधि से सम्मानित किया गया।